No. of Printed Pages : 3

बी.एच.डी.ई.-101 / ई.एच.डी.-1

स्नातक उपाधि कार्यक्रम

सत्रांत परीक्षा

07885

दिसम्बर, 2017

ऐच्छिक पाठ्यक्रम : हिन्दी

बी.एच.डी.ई.-101 / ई.एच.डी.-1 : हिन्दी गद्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए । **प्रथम** प्रश्न **अनिवार्य** है ।*

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं ***तीन*** की प्रसंग-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) "शहर में कोई हलचल थी न मारकाट । एक बूँद भी ख़ून नहीं गिरा था । आज तक किसी स्वाधीन देश के राजा की पराजय इतनी शांति से, इस तरह ख़ून बहे बिना न हुई होगी । यह वह अहिंसा न थी, जिस पर देवगण प्रसन्न होते हैं । यह वह कायरपन था जिस पर बड़े-बड़े कायर भी आँसू बहाते हैं ।"

(ख) "निर्मला मधुरभाषिणी स्त्री थी, पर अब उसकी गणना कर्कशाओं में की जा सकती थी । दिन भर उसके मुख से जली-कटी बातें ही निकला करती थीं । उसके शब्दों की कोमलता न जाने क्या हो गई ? भावों में माधुर्य का कहीं नाम नहीं । भूँगी बहुत दिनों से इस घर में नौकर थी ।

स्वभाव की सहनशील थी । पर यह आठों पहर की बकबक उससे भी न सही गई । एक दिन उसने भी घर की राह ली । यहाँ तक कि जिस बच्ची को वह प्राणों से भी अधिक प्यार करती थी, उसकी सूरत से घृणा हो गई । बात-बात पर भड़क पड़ती, कभी-कभी मार बैठती ।"

(ग) वत्स, तू परीक्षा में खरा उतरा । बोल, तुझे क्या चाहिए ? हम वर देने के 'मूड' में हैं । बोल, हिन्दी साहित्य के इतिहास में तेरे ऊपर एक अध्याय लिखवा दूँ ? या कहे तो, किसी समीक्षक को तेरे घर में पानी भरने की ड्यूटी लगा दूँ ?

(घ) हाँ, तो भी नाचना होगा । तेरे चरणों की गति और तेरी बाँहों का कंपन आज तेरा नहीं है । तुझे उसका मूल्य दिया जा चुका है । आज रात के अंत तक के लिए तेरी कला बिकी हुई है । नाच ! अभी प्रभात होने तक तू एक ख़रीदी हुई नर्तकी है । जीवन का कुछ भी मोह है, तो तुझे अवश्य नाचना होगा ।

(ङ) और क्या साहब ! देखिए कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि जब आपने अपने लड़के को बी.ए., एम.ए. तक पढ़ाया है तब उनकी बहुएँ भी ग्रेजुएट लीजिए । भला पूछिए इन अक़्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है । अरे मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और क़ाबिल होना । अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेज़ी अख़बार पढ़ने लगीं और 'पॉलिटिक्स' वगैरह पर बहस करने लगीं तब तो हो चुकी गृहस्थी । जनाब, मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं ।

2. 'शरणदाता' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए । *16*

3. 'निर्मला' उपन्यास के आधार पर निर्मला का चरित्र-चित्रण कीजिए । *16*

4. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए । *16*

5. 'कौमुदी महोत्सव' एकांकी की समीक्षा कीजिए । *16*

6. निबन्ध के भेदों पर विचार कीजिए । *16*

7. 'पगडंडियों का जमाना' निबन्ध की विशेषताओं को रेखांकित कीजिए । *16*

8. प्रारंभिक हिन्दी गद्य लेखन पर प्रकाश डालिए । *16*

9. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

   (क) लहना सिंह का चरित्र

   (ख) 'ध्रुवस्वामिनी' की नायिका

   (ग) संस्मरण और रेखाचित्र

   (घ) 'निर्मला' का प्रतिपाद्य